ज्योतिष, भाग्य और स्वतंत्र इच्छा

एक गहन दार्शनिक और आध्यात्मिक विमर्श

आचार्य ने कहा— 'भारतीय दर्शन भाग्य को तीन भागों में विभाजित करता है—संचित, प्रारब्ध और क्रियमाण.' संचित कर्म वह विशाल भंडार है जिसमें अनेक जन्मों के कर्म संचित रहते हैं. प्रारब्ध कर्म वह भाग है जो वर्तमान जीवन में फलित होना निश्चित हो चुका है .क्रियमाण कर्म वे कर्म हैं जो हम इस समय कर रहे हैं. यहीं स्वतंत्र इच्छा का क्षेत्र है. प्रारब्ध को पूर्णत: समाप्त नहीं किया जा सकता .लेकिन क्रियमाण कर्मों के द्वारा उसके प्रभाव को कम या अधिक किया जा सकता है.

ज्योतिषाचार्य
डॉ. तेजस्कर पाण्डेय

रात्रि का समय था. आकाश तारों से भरा हुआ था. दूर क्षितिज पर सप्तर्षि मंडल स्पष्ट दिखाई दे रहा था. हल्की शीतल हवा चल रही थी. विश्वविद्यालय परिसर के निकट स्थित वेधशाला की छत पर आचार्य पाठक और तेजस्कर बैठे हुए थे. उनके सामने खुला आकाश था—वही आकाश जिसे मानव हजारों वर्षों से देखता आया है और जिसमें उसने अपने भाग्य, अपने देवताओं, अपने भय, अपनी आशाओं और अपने भविष्य की झलक खोजने का प्रयास किया है. कुछ देर मौन रहने के बाद तेजस्कर ने पूछा— 'गुरुदेव, संसार में ज्योतिष के विषय में सबसे बड़ा विवाद क्या है?'

आचार्य पाठक मुस्कुराए और बोले— 'सबसे बड़ा विवाद यह है कि यदि ज्योतिष सत्य है तो क्या मनुष्य स्वतंत्र है? और यदि मनुष्य स्वतंत्र है तो फिर ज्योतिष का क्या महत्व है? यही प्रश्न हजारों वर्षों से मानव बुद्धि को चुनौती देता रहा है.'

तेजस्कर ने कहा— 'मैंने भी अनेक लोगों को यह कहते सुना है कि यदि सब कुछ ग्रहों में लिखा हुआ है तो फिर प्रयास करने का क्या लाभ? और यदि प्रयास से सब कुछ बदल सकता है तो फिर कुंडली देखने की आवश्यकता क्या है?'

आचार्य ने कहा— 'यही वह भ्रम है जिसने ज्योतिष को सबसे अधिक क्षति पहुँचाई है. वास्तव में न तो सब कुछ पूर्वनिर्धारित है और न ही सब कुछ पूर्णत: स्वतंत्र है. जीवन इन दोनों के मध्य स्थित एक अद्भुत संतुलन है.' वे कुछ क्षण रुके और फिर बोले— 'सबसे पहले हमें यह समझना होगा कि भाग्य वास्तव में है क्या?'

सामान्य व्यक्ति भाग्य को किसी रहस्यमय शक्ति के रूप में देखता है. जब कोई घटना उसकी इच्छा के अनुसार नहीं होती तो वह कह देता है—'यह मेरे भाग्य में नहीं था.' जब कोई अनपेक्षित सफलता मिलती है तो वह कहता है—'मेरा भाग्य अच्छा था.' परन्तु भारतीय दर्शन में भाग्य की परिभाषा इससे कहीं अधिक गहरी है.

वेदांत, सांख्य, योग, न्याय, मीमांसा और ज्योतिष—सभी इस बात को स्वीकार करते हैं कि ब्रह्माण्ड में कोई भी घटना बिना कारण के नहीं होती. प्रत्येक परिणाम के पीछे कोई न कोई कारण अवश्य होता है. यदि कारण दिखाई नहीं दे रहा तो इसका अर्थ यह नहीं कि कारण अस्तित्व में नहीं है. भारतीय दर्शन कहता है कि भाग्य वास्तव में अतीत के कर्मों का फल है. अर्थात भाग्य कोई बाहरी शक्ति नहीं है. भाग्य स्वयं हमारा ही निर्मित किया हुआ कर्मफल है. आज जो भाग्य है वह कभी कर्म था. और आज जो कर्म है वह कल भाग्य बन जाएगा. इस दृष्टिकोण से देखा जाए तो भाग्य और कर्म विरोधी नहीं हैं. वे एक ही प्रक्रिया के दो चरण हैं.

आचार्य ने कहा— 'कल्पना करो कि तुमने वर्षों तक अध्ययन किया. उसके बाद तुम किसी प्रतियोगी परीक्षा में सफल हुए. लोग कहेंगे—'यह तुम्हारे भाग्य में था.' परन्तु वास्तविकता क्या है? वह सफलता तुम्हारे वर्षों के परिश्रम का परिणाम है.'

तेजस्कर ने कहा— 'अर्थात भाग्य वास्तव में कर्म का ही परिपक्व रूप है?' 'हाँ,' आचार्य ने उत्तर दिया, 'और यही ज्योतिष को समझने की पहली कुंजी है.' फिर तेजस्कर ने पूछा— 'लेकिन गुरुदेव, यदि भाग्य पूर्व कर्मों का परिणाम है तो जन्मकुंडली में उसका संकेत कैसे दिखाई देता है?' आचार्य ने आकाश की ओर देखते हुए कहा— 'यहीं ज्योतिष का रहस्य आरम्भ होता है.' उन्होंने कहा— 'ग्रह भाग्य का निर्माण नहीं करते. ग्रह भाग्य का संकेत करते हैं. 'यह ठीक वैसा ही है जैसे घड़ी समय का निर्माण नहीं करती, केवल समय का संकेत देती है. थर्मामीटर बुखार उत्पन्न नहीं करता, केवल बुखार को प्रदर्शित करता है. उसी प्रकार ग्रह घटनाएँ उत्पन्न नहीं करते; वे उन कर्मफल प्रवृत्तियों का दर्पण होते हैं जो पहले से अस्तित्व में हैं.' यही वह सिद्धान्त है जिसे आधुनिक ज्योतिष में अक्सर गलत समझ लिया जाता है. अनेक लोग यह मान लेते हैं कि मंगल विवाह तोड़ देता है, शनि दु:ख देता है, राहु भ्रम उत्पन्न करता है और बृहस्पति सफलता देता है. किन्तु वैदिक दृष्टिकोण इससे भिन्न है. मंगल विवाह नहीं तोड़ता. शनि दु:ख नहीं देता. राहु भ्रम उत्पन्न नहीं करता. वे केवल उन कर्मिक ऊर्जाओं के प्रतीक हैं जो व्यक्ति के जीवन में सक्रिय हैं. यदि किसी व्यक्ति की कुंडली में मंगल प्रबल है तो वह ऊर्जा, साहस, संघर्ष और प्रतिस्पर्धा का संकेत हो सकता है. वही ऊर्जा सैनिक बना सकती है. वही ऊर्जा पुलिस अधिकारी बना सकती है. वही ऊर्जा सर्जन बना सकती है. और वही ऊर्जा क्रोधी व्यक्ति भी बना सकती है. निर्णायक तत्व ग्रह नहीं है. निर्णायक तत्व व्यक्ति की चेतना है. यहीं स्वतंत्र इच्छा का प्रवेश होता है. आचार्य ने कहा— 'ग्रह तुम्हें ऊर्जा देते हैं, दिशा नहीं. दिशा तुम्हें स्वयं निर्धारित करनी होती है.' यह सुनकर तेजस्कर गम्भीर हो गए.

उन्होंने पूछा— 'क्या यही कारण है कि समान कुंडली वाले व्यक्तियों का जीवन समान नहीं होता?

आचार्य ने उत्तर दिया— 'बिल्कुल.' ज्योतिष के इतिहास में हजारों उदाहरण मिलते हैं जहाँ लगभग समान ग्रहयोग वाले लोगों ने बिल्कुल अलग जीवन जिया. कुछ लोग विपरीत परिस्थितियों में टूट गए. कुछ लोग उन्हीं परिस्थितियों में महान बन गए. यदि ग्रह ही सब कुछ निर्धारित करते, तो ऐसा सम्भव नहीं होता. यही कारण है कि भारतीय ज्योतिष केवल ग्रहों को नहीं देखता. वह व्यक्ति की चेतना, संस्कार, शिक्षा, वातावरण, परिवार, समाज और पुरुषार्थ को भी महत्व देता है. यही कारण है कि महर्षि पराशर ने ग्रहों के साथ-साथ देश, काल और पात्र का विचार करने का निर्देश दिया है. एक ही ग्रहयोग भारत में एक परिणाम दे सकता है. उसी ग्रहयोग का परिणाम अमेरिका में भिन्न हो सकता है. उसी ग्रहयोग का परिणाम ग्रामीण परिवेश में अलग और महानगर में अलग हो सकता है. उसी ग्रहयोग का परिणाम एक अशिक्षित व्यक्ति और एक विद्वान व्यक्ति में अलग हो सकता है. इसका अर्थ यह है कि ग्रह संभावना प्रदान करते हैं. लेकिन उस संभावना का वास्तविक रूप परिस्थितियाँ और निर्णय मिलकर निर्धारित करते हैं.

आचार्य ने आगे कहा— 'यदि जीवन को समझना है तो भाग्य और स्वतंत्र इच्छा को युद्धरत शक्तियों की तरह मत देखो. उन्हें एक साझेदारी की तरह देखो.' उन्होंने एक उदाहरण दिया. 'मान लो किसी व्यक्ति को जन्म से अत्यंत सुरीला स्वर मिला है. यह उसका भाग्य है. लेकिन यदि वह अभ्यास नहीं करता तो वह कभी महान गायक नहीं बन पाएगा. दूसरी ओर कोई व्यक्ति साधारण स्वर लेकर जन्म ले सकता है, लेकिन कठोर अभ्यास के कारण वह सफलता प्राप्त कर सकता है.'

सोमवती अमावस्या पर दुर्लभ शुभ संयोग का योग

15 जून 2026 को पड़ रही सोमवती अमावस्या इस बार कई दुर्लभ शुभ संयोगों के कारण विशेष महत्व रखती है. सोमवार के दिन अमावस्या होने के साथ ही मृगशिरा नक्षत्र, सर्वार्थ सिद्धि योग और अमृत सिद्धि योग का निर्माण हो रहा है, जिससे यह दिन पूजा-पाठ, दान-पुण्य और पितृ तर्पण के लिए अत्यंत फलदायी माना जा रहा है.

पंचांग के अनुसार अमावस्या तिथि 14 जून की मध्यरात्रि 12:20 बजे से शुरू होकर 15 जून की सुबह 8:24 बजे तक रहेगी. उदयातिथि के आधार पर सोमवती अमावस्या का व्रत और पूजन 15 जून को किया जाएगा.

ज्योतिषीय गणनाओं के अनुसार इस दिन चंद्रमा वृषभ राशि में उच्च अवस्था में रहेंगे. वहीं बुध मिथुन, गुरु कर्क और मंगल मेष राशि में स्थित रहेंगे. ग्रहों की यह अनुकूल स्थिति धार्मिक और आध्यात्मिक कार्यों के लिए शुभ मानी जा रही है.

सोमवती अमावस्या पर पीपल वृक्ष की पूजा का विशेष महत्व है. महिलाएं परिवार की सुख-समृद्धि और दीर्घायु की कामना से पीपल की 108 परिक्रमा करती हैं. साथ ही तुलसी, शमी और बेलपत्र की पूजा तथा संध्या के समय दीपदान करने की परंपरा भी प्रचलित है.

अमावस्या तिथि पितरों के निमित्त तर्पण और दान के लिए भी महत्वपूर्ण मानी जाती है. काले तिल मिश्रित जल से तर्पण करने और जरूरतमंदों को दान देने से पितरों का आशीर्वाद प्राप्त होने की मान्यता है. इसके अलावा गौ सेवा, पक्षियों को दाना-पानी और अन्य धार्मिक कार्यों को भी इस दिन विशेष पुण्यदायी माना गया है.

मां लक्ष्मी के पूजन से आती है धन-समृद्धि

सनातन धर्म में मां लक्ष्मी को धन, वैभव, सुख और समृद्धि की देवी माना गया है. धार्मिक मान्यताओं के अनुसार श्रद्धा और विधि-विधान से किए गए लक्ष्मी पूजन से घर में खुशहाली, आर्थिक उन्नति और सकारात्मक ऊर्जा का आगमन होता है. यही कारण है कि विशेष पर्वों और शुभ अवसरों पर मां लक्ष्मी की पूजा का विशेष महत्व बताया गया है.

मां लक्ष्मी की आराधना केवल धन प्राप्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जीवन में संतुलन, सौभाग्य और मानसिक शांति का भी प्रतीक मानी जाती है. मान्यता है कि जिस घर में स्वच्छता, सदाचार और धार्मिक वातावरण होता है, वहां देवी लक्ष्मी का स्थायी निवास होता है. इसलिए पूजा से पहले घर की साफ-सफाई और पवित्रता का विशेष ध्यान रखा जाता है.

धार्मिक ग्रंथों में बताया गया है कि कमल पुष्प, दीपक, धूप और नैवेद्य अर्पित कर मां लक्ष्मी की पूजा करने से विशेष फल प्राप्त होता है. भक्त लक्ष्मी मंत्रों का जाप कर देवी से परिवार की सुख-समृद्धि और आर्थिक उन्नति की प्रार्थना करते हैं. कई लोग इस अवसर पर जरूरतमंदों को दान देकर पुण्य अर्जित करने का भी प्रयास करते हैं. ज्योतिष और धार्मिक मान्यताओं के अनुसार नियमित रूप से मां लक्ष्मी का स्मरण और पूजन करने से नकारात्मकता दूर होती है तथा जीवन में सफलता के नए अवसर प्राप्त होते हैं.

वास्तु के अनुसार जानिए किस दिशा में हो मुख्य द्वार

वास्तु शास्त्र में घर के मुख्य प्रवेश द्वार को अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है. मान्यता है कि घर में प्रवेश करने वाली सकारात्मक और नकारात्मक ऊर्जा का प्रमुख माध्यम मुख्य द्वार ही होता है. इसलिए प्रवेश द्वार की दिशा का चयन सोच-समझकर करना चाहिए. वास्तु विशेषज्ञों के अनुसार उत्तर, पूर्व और उत्तर-पूर्व दिशा में बना मुख्य द्वार शुभ फलदायी माना जाता है.

वास्तु शास्त्र के अनुसार पूर्व दिशा सूर्यदेव की दिशा मानी जाती है. इस दिशा में बना प्रवेश द्वार घर में ऊर्जा, उत्साह और नई संभावनाओं का संचार करता है. वहीं उत्तर दिशा को धन के देवता कुबेर की दिशा माना जाता है, इसलिए इस दिशा में मुख्य द्वार होने से आर्थिक उन्नति और समृद्धि के अवसर बढ़ने की मान्यता है.

उत्तर-पूर्व यानी ईशान कोण को भी अत्यंत शुभ माना गया है. इस दिशा में स्थित प्रवेश द्वार घर में आध्यात्मिकता, शांति और सकारात्मक वातावरण बनाए रखने में सहायक माना जाता है. हालांकि वास्तु शास्त्र में केवल दिशा ही नहीं, बल्कि द्वार का आकार, स्वच्छता और उसके आसपास का वातावरण भी महत्वपूर्ण बताया गया है. मुख्य द्वार के सामने अवरोध, कूड़ा-कचरा या टूटी-फूटी वस्तुएं नहीं होनी चाहिए.

रंभा तृतीया : सौंदर्य और सौभाग्य का पर्व

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार रंभा तृतीया व्रत महिलाओं के लिए विशेष महत्व रखता है. इस दिन भगवान शिव, माता पार्वती और देवी लक्ष्मी की पूजा की जाती है तथा सौभाग्य, समृद्धि और वैवाहिक सुख की कामना की जाती है. रंभा की कथा आज भी भारतीय धार्मिक परंपरा में सौंदर्य, तपस्या और कर्मफल के अद्भुत संगम के रूप में सुनाई जाती है.

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष की तृतीया को मनाया जाने वाला रंभा तृतीया व्रत इस वर्ष 17 जून को रखा जाएगा. हिंदू परंपरा में यह व्रत सौभाग्य, सुंदरता और सुखी वैवाहिक जीवन की कामना से जुड़ा माना जाता है. इस व्रत का संबंध स्वर्ग की प्रसिद्ध अप्सरा रंभा से है, जिनकी कथा सौंदर्य, तपस्या, श्राप और मुक्ति जैसे अनेक पौराणिक प्रसंगों से जुड़ी हुई है

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार रंभा का जन्म समुद्र मंथन के दौरान हुआ था. देवताओं और असुरों द्वारा किए गए समुद्र मंथन से निकले चौदह रत्नों में रंभा को भी एक महत्वपूर्ण रत्न माना गया है. अपनी अनुपम सुंदरता, मधुर स्वभाव और अद्वितीय नृत्य-कला के कारण वे शीघ्र ही स्वर्गलोक की सर्वश्रेष्ठ अप्सराओं में गिनी जाने लगीं. कहा जाता है कि उनकी सुंदरता का प्रभाव तीनों लोकों तक फैला हुआ था. जब विश्वामित्र कठोर तपस्या में लीन थे, तब देवराज इंद्र को भय हुआ कि उनकी तपस्या से प्राप्त होने वाली शक्ति स्वर्ग के लिए चुनौती बन सकती है. तपस्या भंग करने के उद्देश्य से इंद्र ने रंभा को पृथ्वी पर भेजा. रंभा ने अपने नृत्य और सौंदर्य के माध्यम से ऋषि का ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया, लेकिन विश्वामित्र ने इसे अपनी साधना में बाधा माना. तपस्या भंग होने की आशंका से क्रोधित होकर विश्वामित्र ने रंभा को श्राप दे दिया कि वह हजारों वर्षों तक पृथ्वी पर पत्थर की शिला बनकर रहेगी. श्राप सुनते ही रंभा भयभीत हो उठीं और ऋषि से क्षमा याचना करने लगीं. उनके पश्चाताप को देखकर विश्वामित्र का क्रोध कुछ शांत हुआ. उन्होंने यह भी बताया कि एक निश्चित समय के बाद महान तपस्वियों और पुण्य के प्रभाव से उन्हें इस श्राप से मुक्ति प्राप्त होगी. पौराणिक ग्रंथों में उल्लेख मिलता है कि लंबे समय तक शिला रूप में रहने के बाद रंभा को अंतत: श्राप से मुक्ति मिली और वे पुन: अपने दिव्य स्वरूप में स्वर्ग लौट सकीं. इस घटना को धैर्य, पश्चाताप और क्षमा की शक्ति का प्रतीक माना जाता है.

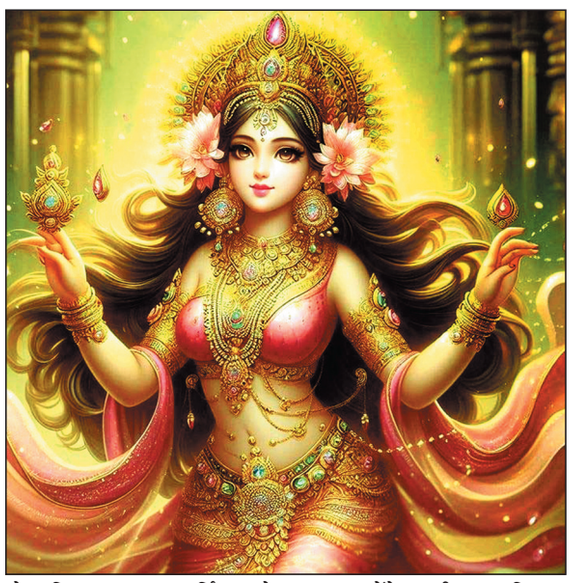

घर पर क्रिस्टल कछुआ रखना बढ़ाता है सुख-समृद्धि

वास्तु शास्त्र और फेंगशुई में क्रिस्टल कछुए को शुभता, दीर्घायु और समृद्धि का प्रतीक माना जाता है. मान्यता है कि इसे घर या कार्यस्थल पर उचित दिशा में रखने से सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह बढ़ता है और आर्थिक उन्नति के मार्ग खुलते हैं. यही कारण है कि कई लोग इसे सौभाग्य और सफलता का प्रतीक मानकर अपने घरों और कार्यालयों में स्थापित करते हैं. फेंगशुई के अनुसार कछुआ चार शुभ प्रतीकों में से एक माना जाता है. क्रिस्टल से बना कछुआ नकारात्मक ऊर्जा को कम करने और मानसिक शांति बनाए रखने में सहायक माना जाता है. कई लोग इसे करियर में स्थिरता, पारिवारिक सुख और आर्थिक मजबूती के लिए रखते हैं.

वास्तु मान्यताओं के अनुसार क्रिस्टल कछुए को उत्तर दिशा में रखना शुभ माना जाता है, क्योंकि यह दिशा करियर और अवसरों से जुड़ी मानी जाती है. वहीं घर के ड्रॉइंग रूम, अध्ययन कक्ष या कार्यालय की मेज पर इसे रखने की भी सलाह दी जाती है. हालांकि इसे साफ-सुथरे स्थान पर रखना आवश्यक माना जाता है. धार्मिक और पारंपरिक मान्यताओं के अनुसार क्रिस्टल कछुआ धैर्य, स्थिरता और सुरक्षा का प्रतीक है.

दिनांक- 14 से 20 जून 2026 तक

राशिफल

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास,
कोतवाली बाजार,
जबलपुर मो.नं.
098266-21998

साप्ताहिक ग्रहस्थिति- इस सप्ताह सूर्य वृषभ राशि में ता. 15 को 8/1 रात से मिथुन राशि में, मंगल मेष राशि में ता. 20 को 10/48 रात से वृषभ राशि में, बुध मिथुन राशि में, गुरू कर्क राशि में, शुक्र कर्क राशि में, शनि मीन राशि में, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा वृषभ मिथुन कर्क और सिंह राशि में संचरण करेगा.

ग्रहयोगों का प्रभाव :- ता. 15 को सूर्य, मिथुन, संक्रांति के प्रभाव से रूई, सूत, कपास, पाट, बारदाना, सूत, रेशम, सरसों, लोहा, तिल, तेल, कन्दमूल, फल, गुड, खांड, देशी शक्कर, चीनी, घी, उडद मूंग, चावल, गेहूं, चना, अरहर, मटर तेजी आएगी. सोना, चांदी में साधारण तेजी का रूख रहेगा. ता. 20 को वृषभे भौम पर शनि की दृष्टि होने से लाल, वस्तुएं, लाल चन्दन, जूट, पाट, बारदाना, अफीम, रूई, कपास, सूत, अनाज, कपूर, केसर, तेल, सोना, चांदी, तांबा, पेट्रोलियम प्रोडक्ट में तेजी का लाभ मिलेगा.

पर्व-व्रत-त्यौहार :

रविवार	14 जून को	श्राद्ध अमावस्या,
सोमवार	15 जून को	स्नानदान सोमवती अमावस्या, अधिक मास समाप्त,
मंगलवार	16 जून को	सौर आषाढ़ मास प्रारम्भ,
बुधवार	17 जून को	रम्भा तृतीया, रम्भा तीज व्रत,
गुरूवार	18 जून को	विनायकी गणेश चतुर्थी,
शनिवार	20 जून को	विंध्यवासिनी पूजा,

मेष

इस सप्ताह आपको अपेक्षित सफलता नहीं मिलेगी, वरिष्ठ सहयोगी का सहयोग बना रहेगा, सप्ताह के मध्य अपनों के बीच अकेलेपन व तनाव का अनुभव हो सकता है, व्यवसायिक कार्यो की जिम्मेदारी में सहयोग मिलेगा, पुरानी परेशानियों से कुछ हद तक राहत मिलेगी, राजकीय क्षेत्र में सफलता मिलेगी, यात्रा में सावधानी रखें, स्थाई संपत्ति का विस्तार हो सकता हैं.

वृषभ

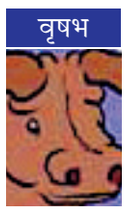

सप्ताह के शुरूआत में सैर सपाटे और दूर दराज की यात्रा में विशेष रूचि रहेगी, कार्यक्षेत्र में आपके वरिष्ठ अधिकारीआपकी सराहना कर सकते हैं, वित्तीय मामलों में सफलता मिलेगी, जमीन जायजाद प्रापर्टी के कार्यो में खर्च होगा, सामाजिक कार्यो में सफलता मिलेगी, गैर जरूरी कार्यो में धन खर्च न करें, सप्ताह के अंत में घरेलू कार्यो पर विशेष ध्यान रखें.

मिथुन

आय में वृद्धि होगी, कार्यक्षेत्र में सहकर्मियों का रवैया आपके पति असहयोगात्मक हो सकता है, किसी को भी जल्दबाजी मेंकोई आश्वासन न दें, पूरा कर पाने में परेशानी हो सकती है, पैतृक संपत्ति का विवाद सामने आ सकता है, पूज्यव्यक्ति की सलाह उपयोगी और लाभकारी रहेगी, जीवनसाथी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें.

कर्क

कार्यक्षेत्र में आपका प्रभाव बढ़ेगा, व्यवसाय के क्षेत्र में साझेदारों से थोड़ा बहुत तनाव आ सकता है, उद्योग के क्षेत्र में नई कार्ययोजना पर विचार होगा, अपनी इच्छाशक्ति के लिये आप कड़ी मेहनत करेंगे, जीवनसाथी और बच्चों से आपकी अपेक्षाएं बढ़ सकती हैं, वित्तीय मामलों मेंशीघ्रता से कोई भी निर्णय न करें, राजकीय क्षेत्र में बेहतर सफलता की संभावना बनेगी.

सिंह

सफलता के लिये सकारात्मक दृष्टिकोण अपनायें, जमिथुन जायजाद और परिवहन के क्षेत्र में आपको लाभ मिल सकता है, किसी अनजान व्यक्ति से सुखद समाचार मिलने की संभावना है, दाम्पत्य जीवन में मधुरता आयेगी, सप्ताह के अंतिम समय किसी पुराने रोग से कष्ट की संभावना है, श्रम उतना ही करें, जितना आपकाशरीर साथ दे.

कन्या

आर्थिक दृष्टि से यह सप्ताह आपके लिये मनोवांछित सफलता प्रदान करने वाला होगा, आप नये अनुबंधों में शामिल हो सकते हैं, किसी विपरीत लिंगीय मित्र या साझेदार से लाभ प्राप्त होगा, जमिथुन जायजाद और उद्योग के क्षेत्र में आपको अड़चनों का सामना करना पड़ सकता है, आप नये कार्य की शुरूआत कर सकते हैं, सहकर्मियों का सहयोग बना रहेगा.

तुला

खानपान पर विशेष ध्यान रखें, घर की जरूरतों का सामान जुटाने में खर्च होगा, परिवार के साथ मांगलिक कार्यो, में जाने का अवसर मिलेगा, वाणी पर संयम रखें, आपकी बातों से किसी को तकलीफहो सकती है, सप्ताह के अंतिम समय किसी मांगलिक उत्सव के साथ आनन्द का अनुभव कर सकते हैं, किसी अतिथि आगमन का योग है, आप अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें.

वृश्चिक

आप मानसिक तनाव के शिकार हो सकते हैं, कार्यक्षेत्र में वरिष्ठों की अपेक्षाओं का ध्यान रखें, यदि आप राजनीति में हैं, तो सफलता मिलेगी, किसी करीबी मित्र की सलाह से आपको वित्तीय लाभ के योग हैं, भावनात्मक संबंधों में आप उलझनों से बचें, स्वास्थ्य में आलस्य और सुस्ती महसूस कर सकते हैं, कामकाज के सिलसिले में सार्थक यात्रा के योग हैं.

धनु

इस सप्ताह कार्यक्षेत्र में अतिरिक्त जिम्मेदारी का बोझ उठा सकते हैं, छात्रों को प्रतियोगी परीक्षा में सफलता मिलेगी, नये व्यवसायिक अनुबंधों में शामिल होने का लाभ मिलेगा, आप वित्तीय दृष्टि से संतुष्ट रहेंगे, नये वाहन खरीदने का विचार होगा, सप्ताह के उत्तरार्ध में मानसिक तनाव व निराशा का अनुभव हो सकता है, वाणी में कटुता के चलते करीबी लोगों से सावधानी रखें,.

मकर

आप नये व्यवसायिक अनुबंध कर सकते हैं, कारोबार के क्षेत्र में नई सफलता मिलेगी, आप अपनी वित्तीय स्थिति से प्रसन्न रहेंगे, किसी पारिवारिक आयोजन में अत्याधिक खर्च हो सकता है, आपकी सामाजिक सक्रियता बढने से मान सम्मान में वृद्धि होगी, सप्ताह के मध्य अधिक आत्म विश्वास में बिना किसी सलाह से किया गया फैसला परेशानी का कारण बन सकता है.

कुम्भ

आपको उतार चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है, यदि आप किसी नई नौकरी की तलाश में हैं, तो सप्ताह के उत्तरार्ध में सफलता मिलेगी, किसी करीबी मित्र से सुखद समाचार मिल सकता है, जीवनसाथी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें, सप्ताह के अंतिम समय अधिकारी वर्ग आपके कामकाज को लेकर नाराजगी व्यक्त कर सकते हैं, वास्तेसावधानी रखें, अत्याधिक विश्वास न करें.

मीन

कार्य क्षेत्र में आपकी मनोकामना पूर्ण होगी, उद्यमी साझेदारों के साथ नई कार्य योजना शुरू कर सकते हैं, आर्थिक स्थिति संतोषजनक रहेगी, आपका स्वास्थ्य पहले से बेहतर रहेगा, मित्रों के साथ दूर दराज की यात्रा का संयोग बनेगा, आप बच्चों की उपलब्धियों पर गर्व कर सकते हैं, आर्थिक कार्यो में समय व धन खर्च हो सकता है, नये कार्यक्षेत्र में निवेश कर सकते हैं.